कन्दरिया महादेव मन्दिर में उत्कीर्ण प्रतिमाओं का सामाजिक अवलोकन

शोधार्थी
संजय कुमार यादव (NET JRF)
प्राचीन इतिहास विभाग
श्री मंहथ रामाश्रय दास पी०जी० कालेज,
भुड़कुड़ा गाजीपुर

पूर्व मध्यकालीन इतिहास में राजपूत राजवंशों का उदय हुआ। जिसमे चन्देल राजवंश भी एक था। प्रतिहार साम्राज्य के पतन के पश्चात बुन्देलखण्ड के भू-भाग पर चन्देल वंश के स्वतंत्र राजनीतिक इतिहास का प्रारम्भ हुआ। चन्देल राजवंश ९वीं से १२वीं शताब्दी तक स्वतंत्र रूप से यमुना और नर्मदा के बीच बुन्देलखण्ड तथा उत्तर प्रदेश के दक्षिणी-पश्चिमी भाग पर शासन किया। चन्देलों ने लगभग चार शताब्दियों तक शासन किया। चन्देल शासक न केवल महान विजेता तथा सफल शासक थे अपितु कला के प्रसार तथा सरंक्षण में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

प्राचीन भारतीय कलाओं में मूर्तिकला सर्वाधिक लोकप्रिय है। यह मानव जीवन के अभिन्न अंग के रूप में लौकिक परम्पराओं में व्याप्त है। भारतीय जीवन की विभिन्न आदर्शो की प्रगति ही मूर्तिकला का उद्देश्य रहा है। इसी में धार्मिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परम्परायें समाहित हैं। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष का संवर्धन ही भारतीय मूर्तिकला का आदर्श है। मूर्तिकला लौकिक आदर्शों का अनुगमन करती हुई सौन्दर्यानुभूति में भी पूर्ण सक्षम है। यह मानव के सर्वांगीण विकास पर बल देती है। यह सत्य है कि विश्व की समस्त कलायें धार्मिक परिधान में प्रस्फुटित हुई किन्तु भारतीय मूर्तिकला मानव के निःश्रेयस सिद्धि के साथ जीवन के भौतिक पक्षों की उपेक्षा नही करती है। मूर्तिकलाकार ने प्रकृति के विभिन्न अंगों को आदर्श रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया। उसकी अभिव्यक्ति में कलाकार की अनुभूति का दर्शन होता है। एक ही कलाकृति को विभिन्न दर्शन, भिन्न-भिन्न रूपो में देखते हैं। कोई उसमे भौतिक जीवन की काम-क्रीडा देखता है तो कोई आध्यात्मिक जगत में आत्मा एवं परमात्मा का तादात्म्य। वास्तव में आध्यत्मिक भावना मूर्ति के अन्त: झाकंती रहती है किन्तु दृश्य नही है। इसलिये भारतीय मूर्तिकला विचार या भाव प्रधान मानी गयी है।

प्राचीन भारत में मूर्तिकला का एक अतिप्रतिष्ठित केन्द्र खजुराहो है जो अपने सौन्दर्य एवं विषय-वैविध्य के लिये प्रख्यात है। इन मूर्तियों का निर्माण जहाँ सांस्कृतिक दृष्टि से राजपूती विलासिता सामन्तवादिता एंव तांत्रिकता को इंगित करती है वहीं कलात्मक दृष्टि से वास्तुकला एवं मूर्तिकला में सामजस्य का भी प्रतिनिधित्व करता है। यह ठीक ही कहा गया है कि मूर्तिविहीन मन्दिर वह देहयष्टि है जो आभूषणविहीन हो। चन्देल शासकों ने इन मूर्तियों को प्रश्रय प्रदान कर उन्हें अपनी सांस्कृतिक परम्परा का धरोहर बनाया। सौभाग्य से खजुराहों के मन्दिर एवं मूर्तियाँ मुसलमानों के क्रूर दृष्टि से अभूत रहीं जिनसे मध्य भारतीय मूर्तिशिल्प का विषद विवरण प्राप्त होता है।

खजुराहों के प्रमुख मन्दिरों में कन्दरिया महादेव मन्दिर विशेष प्रसिद्ध है। कन्दरिया महादेव मन्दिर को गण्डदेव के पुत्र सम्राट विद्याधर ने बनवाया था। माना जाता है कि इस मन्दिर का निर्माण ई० १०२५ से १०५० के मध्य हुआ। कन्दरिया महादेव मन्दिर की मूर्तिकला बहुत ही अद्भुत है। यहाँ पर बहुत सारी उत्कीर्ण की गयी मूर्तियाँ पायी जाती हैं।

खजुराहो के मूर्तियों को उसके बाहरी स्वरूप के आधार पर ५ भागों में बांटा गया है-

पहली वर्ग में वे मूर्तियाँ हैं जो मन्दिर के गर्भ गृह में पूजार्थ स्थापित की गयी हैं। ये मूर्तियाँ चारो तरफ से तराशी गयी हैं। यह सभी मूर्तियाँ शास्त्रानुकूल प्रतिबद्धता में अवश्य बनी हैं लेकिन अंलकरण में कलाकार ने अपने स्वंतत्र प्रतिभा का प्रयोग किया है और सौन्दर्य का प्रतिस्थापन किया है। मुख्य मूर्ति के साथ पार्श्व देवताओं का अंकन उसने अपनी इच्छा से

किया है। जो पूर्ण यौवन के आनन्द एवं पवित्र शक्ति के प्रतीक है।

द्वितीय वर्ग की मूर्तियों में मुख्य देवता के परिवार, पार्श्व तथा आवरण देवता की मूर्तियाँ हैं जो मन्दिरों के अधिष्ठान रथयागों एवं बाढ़ से निर्मित हैं। ये मूर्तिया ज्यादातर से सम्मुख दर्शन के सिद्धांत पर बनी हैं किन्तु त्रिपार्श्वदर्शी भी हैं। स्वतंत्र रूप से निर्मित की गयी मूर्तिया विभिन्न रूपों और मुद्राओं में पायी जाती हैं। देवता अपनी शक्तियों के साथ अधिकांशतः आलिंगन मुद्रा में बने हैं। शिव-पार्वती, राम-सीता, बलराम-रेवती. गणेश-विघ्नेश्वरी, काम-रति, गन्धर्व-नाग आदि मूर्तियाँ मनोरंजक एवं आकर्षक भाव भंगिमाओं में उत्कीर्ण हैं। गर्भगृह के प्रवेश द्वार पर मुख्य देवता की लांक्षन की लघु मूर्ति बनी है। प्रवेश द्वार के उपरी फलक पर नवग्रह, द्वार पार्श्व में गजलक्ष्मी की मूर्तियाँ दृष्टिगत होती है। कन्दरिया महादेव मन्दिर में नृत्य करती सप्त मातृकाएं विशेष मनमोहक हैं।

तृतीय वर्ग में अप्सराओं तथा सुर-सुन्दरियों की मूर्तियों का निरूपण किया गया है। सुर-सुन्दरी मूर्तियों में श्रृगांर प्रसाधनों एवं रस सिद्धान्तों का सम्यक प्रस्तुती के साथ इन मूर्तियों में सौन्दर्य एवं प्रेमाकर्षण भी है। इनमे कुमारियों, नर्तकियों एवं परममोहिनी महामाया की संदेश वाहिका भी है जो मानव को अभिज्ञान द्वारा महाविद्या की ओर प्रेरित करती है। वह लज्जालु बालिका जो अपने प्रेमी के आगमन से लज्जित है। कभी स्नान करके बाल निचोड़ती है जैसे मानो विश्व को काम सतृप्त कर रही है, कभी नृत्यरत, काम-क्रीड़ा, भारी नितम्ब तथा चंचल नेत्रों से कामाग्नि में भस्म करती है, इन विभिन्न कामुक दृश्यो में उसके मुख एवं नेत्र में आश्चर्यजनक शान्ति है। इन मूर्ति पट्टीकाओं में का पालिक एवं कौल साधकों की व्याभिचार क्रियायें भी प्रदर्शित हैं जो भवभूति के मालती-माधव तथा राजशेखर के कर्पूर-मंजरी जैसे मध्य युगीन तांत्रिक साहित्य के विवरण के अनुरूप है। कन्दरिया महादेव मन्दिर एक ओर गुरु-शिष्या को उपदेश दे रहे हैं तो दूसरी ओर रतिचक्र महोत्सव चल रहा है। इससे इन मूर्तियों पर तांत्रिक अभिचार का प्रभाव पूर्णतः प्रभावित होता है।

चतुर्थ वर्ग की मूर्तियाँ धर्मेत्तर जीवन से हैं जो युद्ध, आखेट, गुरु-शिष्य तथा मिथुन युगल इत्यादि के दृश्य उपस्थित करते हैं। इसमे मिथुन मूर्तियों का अधिक्य है जो कि यदि शिव-शक्ति, आत्मा-परमात्मा तथा पुरुष-प्रकृति के रूप में है तो उनसे लौकिक भोग विलास, हास-परिहास, काम-क्रीडा एवं आलिंगन के भाव व्यक्त करते हैं। ये मूर्तिया युक्ति एवं मुक्ति में अभिन्नता स्थापित करती हैं तथा सांसारिक जीवन के विविध सुखों का उपभोग करते हुए मोक्ष प्राप्ति करती हैं। सामान्य दर्शक के लिये इन्हें अश्लील मूर्ति ही कह सकते हैं।

पॉचवें वर्ग में कलाकारो ने पशु जगत में भी दक्षता हासिल की है। जिसे व्याल, विराल, वाराल तथा विरालिका इत्यादि नामों से सम्बोधित किया गया है। अनेक कल्पित पशुओं में सिंह जिसपर सशस्त्र सैनिक आरूढ़ हैं तथा पृष्ठ भाग से योद्धा प्रहार कर रहे हैं, अत्यंत रोमांचक दृश्य हैं। शुक, वाराह तथा गजमस्तक मानव कृतियाँ दृष्टिगत है। प्रचलित दंत कथाओं के आधार पर विभिन्न पशुओं को जो मूर्तिगत रूप प्रदान किया गया है, वह निश्चय ही प्रबुद्ध कल्पना शक्ति का द्योतक है।

कन्दरिया महादेव मन्दिर की विशेषता यह है कि यह नागर शैली में बना एक भव्य हिन्दू मंदिर है जिसकी बाहरी दीवारों पर आठ सौ से अधिक मूर्तियाँ सुसज्जित हैं। मन्दिर का ३१ मीटर ऊँचा शिखर हिन्दू ब्रह्माण्ड में मेरू पर्वत या ब्रहमांडीय अक्ष का प्रतीक है। इसमे गर्भ गृह मण्डप और अंतराल जैसे हिस्से हैं। इसकी संरचना में जटिल नक्काशी तथा मूर्तिकला का अद्भुत समावेश है। इस मन्दिर को १९८६ में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया था। साहित्य समाज का दर्पण है तो मूर्तिकला भी साहित्य का कलेवर है। देश एवं काल मूर्तिकला के प्रभावक तत्व हैं। मूर्ति कलाकार एक सामाजिक प्राणी होता है जिस वातावरण में वह श्वास लेता है उसकी जो सामाजिक मान्यतायें होती हैं उसके द्वारा निर्मित मूर्तियों में उन मान्यताओं की स्पष्ट छाप पड़ती हैं। मूर्तियों के अलंकरण में समकालीन वेशभूषा एवं आभूषण का ही प्रयोग होता है। समाज में जो धर्म सर्वाधिक लोकप्रिय होता है उसी धर्म से सम्बन्धित मूर्तियों का भी अधिक निर्माण होता है।

***